MEANING OF RATIO (अनुपात का आशय)

अनुपात एक अंकगणितोय अभिव्यक्ति है। जो दो सम्बन्धतः एवं एक–दूसरे पर आधारित मदों के मध्य सम्बध को स्पस्ट करती है।

Meaning of Accounting Ratios (लेखांकन अनुपात का आशय) लेखांकन अनुपात का आशय लेखांकन पर आधारित अनुपात से है। दूसरे शब्दों में दो लेखांकन चरा (Accounting Variables) के मध्य अंकगणितोय सम्बन्ध का लेखांकन अनुपात कहा जाता है।

Forms of Expression of Ratios (अनुपातो की अभिव्यक्ति के प्रकार)

i)साधरण अनुपात या शुद्ध अनुपात (Simple Ratio or Pure Ratio) इसमें दो संख्याओं अथवा मदों के मध्य सम्बन्ध को सीधे रूप में दिखाया जाता है। तो यह साधारण या शुद्ध अनुपात कहा जाता है। इसमें एक संख्या को दूसरे से भाग देकर भागफल (Quotient) के रूप में अनुपात रखा जाता है। जैसे :– चाल् सम्पति **4,00,000 रू0** तथा चालू दायित्व **2,00,000रू0** हो तो सधारण अनुपात के रूप में कहा जाएगा चालू सम्पति और चालू दायित्व का अनुपात **2:1** है।

ii) प्रतिशत (Percentage) यदि दो संख्याओं के भगफल को **100** से गुणा कर दिया जाए तो अनुपात प्रतिशत के रूप में हो जाता है। उदाहरण के लिए बिक्री **4,00,000** तथा सकल लाभ का अनुपात **1,20,000 रू0** है तो बिक्री पर सकल लाभ का अनुपात $\frac{1,20,000}{4,00,000} \times 100 = 30\%$ कहा जाएगा। सामन्यतः लाभदायकता के अनुपात प्रतिशत के रूप मे ही व्यक्त किए जाते ह।

iii) दर या समय (Rate or Time) इस रूप में यह देख जाता है कि एक संख्या दूसरी संख्या के कितने गुना है। जैसे बिक्री **2,00,000रू** तथा स्टॅाक **40,000रू** है। तो कहा जाएगा कि स्टॅाक आवत्त $\frac{2,00,00}{40,000}$ गुना (Stimes) है। समान्यतः आवर्त्त अनुपात (Turnover Ratios) इस रूप में व्यक्त किए जाते है।

अनुपात विश्लेषण के लभा
'या'
अनुपात विश्लेषण के उदेश्य या महत्व

लेखाकन संख्याओं के सरलीकरण में सहायक (Useful in Simplifing Accounting Figures) लेखाकन संख्याओं अनुपात को सरल संक्षिप्त एवं व्यवस्थित रूप प्रदान करते है। जिससे उन्हं सुविधा से और उचित प्रकार से समझा जा सके।

ii) वित्तीय स्थिति के विश्लेषण में उपयोगी (Useful in Financial Position Analysis) लेखाकन अनुपात से फर्म की वित्तोय स्थिति की जानकारी मिलती है। जो जहाँ एक ओर फर्म के अपने निणयों में सहायक होती है। वहा द्सरी ओर बैकों, वित्तीय संस्थाओं तथा विनियोक्ताओं के लिए भी उपयोगी होती है।

iii) संचालन कार्यकुशलता के माप में उपयोगी (Useful in Assessing the operational Efficiency) लेखांकन अनुपातों के आधार पर फर्म की कार्यकुशलता, लभदायकता तथा कार्य निस्पादन को उचित रूप से मापा जा सकता है।

iv) तुलनात्मक अध्ययन में उपयोगी (Useful in Comparative Study) लेखाकन अनुपाता के आधार पर फर्म ही विभिन्न वषा की एक ही फर्म विभिन्न विभागों अथवा एक फर्म की अन्य फर्म से वित्तिय कार्यकुशलता की दृष्टि से तुलना की जा सकती है। जो प्रबन्धकाय निर्णयों में काफी उपयोगी सिद्ध होती है।

v) नियन्त्रण में उपयोगो (Useful in Control) लेखाकन अनुपातो की गणना के पश्चात् उनके मानक या आदर्श स्तरों से तुलना करक विचरण ज्ञात किए जा सकते है तथा उन विचरणों के समाधान के लिए उचित कार्यवाही की जा सकती है।

(अनुपात विश्लेषण की सीमाएँ)

i)एक अनुपात का सीमित महत्व (Limited use of a Single Ratio) एक अनुपात का अपने-आप में कोइ विशिष्ट महत्व नहीं होता, वित्तिय विवरणों के उचित विश्लेषण एवं निर्वाचन के लिए अनेक अनुपातों की गणना करनी होती है।

ii)मूल आकड़ों की गलती का प्रभाव (Effect of Incorrect Original Data) यदि वित्तिय विवरणों के मूल आँकडों में ही कमियों या गलतियाँ हो तो आँकडो को अच्छा परिणाम दिखाने की दृष्टि से सज्जित (Window Dressing) किया गया हा तो अनुपातो के निस्कर्ष भी भ्रमपूर्ण निकलेंगे।

iii) लेखाकन शब्दावली के विभिन्न अर्थ (Different Meanings to Accounting Terms) लेखाकन शब्दावली में एक ही शब्द के उनेक अर्थ लगाए जाते ह जैसे लाभ ब्याज कर से पूर्व का भी हो सकता है और बाद का भी। इसी प्रकार विनियोजित पूँजी (Capital Employed) के कई अर्थ है।

iv) लेखाकन नीतियों में भिन्नता (Variations in Acconting Bliues) जब विभिन्न फर्मों के लेखाकन अनुसार की तुलना की जाए तो उनकी लेखाकन नीतियाँ की जानकारो कर लेनी चाहिए। यह हो सकता है कि विभिन्न फर्मो विभिन्न लेखाकन नीतियों की जानकारी कर लेनी चाहिए।

v) मूल्य स्तर परिवर्तन का प्रभाव (Effect of Price level change) मूल्य स्तर में परिवर्तन का ध्यान न रखने पर भी अनुपात भ्रमपूर्ण निस्कष दे सकते हैं। उदाहरण के लिए स्थायी सम्पत्तियाँ सन् **1994** में खरीदी गई तो सन् **1994** में स्थायी सम्पति से बिक्री के अनुपात की तुलना म **2008** में यह अनुपात बहुत अधिक हो जाएगा।

vi)ऐतिहासिक विश्लेषण(Historical Analysis) अनुपात विश्लषण एक ऐतिहासिक विश्लेषण है। अर्थात भूतकाल के तथ्यों एवं समकों पर आधारित है। जबकि व्यावसायिक निर्णय लेने एवं नियोजन करने के लिए भविस्यकथन विश्लेषण (Peronal Analysis) की भी आवश्यकता होती है।

vii) व्यक्गित पक्षपात (Personal Biast) अनुपात वित्तीय विश्लेषण के एक साधन है अर्थात स्वयं में एक साध्य नहीं है। इसका महत्वपूर्ण पहलु इनमें उचित निष्कर्ष निकालना है। लेकिन विभिन्न व्यक्ति अपने दृष्टिकोण से उन्ही अनुपाता का विभिन्न अर्थ निकाल सकते है।

अनुपातों का वर्गीकरण

लेखाकन अनुपात का वर्गीकरण विभन्न अधारों पर और विभिन्न रूप में किया जाता है। लेकिन सुविधा एवं सरलता की दृष्टि से अनुपातों को निम्न वर्गो में विभाजित किया जा सकता है।

i) लाभदायकता अनुपात	(Profitability Ratios)
ii) आवर्त अथाव क्रियाशीलत अनुपात	(Tuenover or Activity Ratios)
iii)तरलता अनुपात	(Liquidity Ratios)
iv)दीर्घकालीन शोघन क्षमता के अनुपात	(Long-Term Salve Net Ratios)

लाभदायकता अनुपात (Profitability Ratios)

प्रत्येक व्यवसायिक संस्था का एक मुख्य उदेश्य लाभ अर्जित करना होता है। वास्तव में लाभ केवल व्यवासाय के अस्तिव के लिए ही आवश्यक नहीं है, वरन् इसके विस्तार और विविधीकरण के लिए भी आवश्यक है। "लार्ड कीन्स (Keynes) के शब्दों में" लाभ वह इजन है जो व्यवसायिक किसी भो व्यवसायिक उपक्रम को लाभदायकता उसकी कार्यकुशजता का महत्वपूर्ण मावदण्ड है, जो व्यवासाय के स्वामियों के लिए उनके विनियोग का मूल्य बताता है। "लाभदायकता के अनुपात को सामान्तः प्रतिगत के रूप में निकाला जाता है। और इनका अध्ययन निम्न दो वर्गो में बांटकर किया जास सकता है

i)सामान्य लाभदायकता अनुपात	(Genaral Profitability Ratios)
ii)सम्पूर्ण लाभदायकता अनुपात	(Over-all Profitability Ratios)

सामान्य लाभदायकता अनुपात (Genaral Profitability Ratios) इस वर्ग में विक्रय पर आधरित लाम्दायकता अनुपात का शमिल किया जाता है। जो निम्न प्रकार है।

पद्धसकल लाभ अनुपात (Gross Profit Ratio) इसे सकल लाभ अनुपात(Gross Profit Margin) या शुद्ध विक्री पर उपान्त्र भी (Gross Marogin to Net Sales) भी कहते है। यह अनुपात फर्म के सकल लाभ और शुद्ध बिक्री के सम्बन्ध स्मपित करनाGross Profit Ratio $\frac{\text{Gross Profit}}{\text{Net Sales}}$ x 100

Nores:-1.शुद्ध बिक्रो (Net Ssles) से आशय Total Sales Cash Sales + credit sales)-sales Returns से होता है।
2. यदि प्रश्न में सकल लाभ न दिया हो तो (Seles Cost of Goods Sold) करके इसे ज्ञात कर सकते है।
3.यदि(Cost of Goods Sold) भी जात करना पड़े तो के द्वारा इसकी गणना कर सकते है।
4.यदि प्रश्न के शुद्ध लाभ दिया हो तो उसमें उप्रत्क्ष व्यय तथा ब्याज को जाड़ेकर सकल लाभ जाता किया जा सकता है। (Gross Profit – Net Profit + I.dlcctxp
5. शुद्ध लाभ और अनुपात (Net Profit Ratio) यह अनुपात शुद्ध लाभ और बिक्री के सम्बन्ध को प्रतिगत में व्यक्त करता है। Net Profit Ratio:-$\frac{Net\ Profit}{Net\ Sales}$x100

Note:-यह शुद्ध लाभ का अर्थ (Net Profit after taxes) से होता है।
ii) शुद्ध लाभ की गणना सकल लाभ में से प्रशासनिक व्यय विक्रय व्यय, वित्ति चार्जेज इत्यादि घटा होती।
iii)यदि प्रश्न में गैर संचालन आय एवं व्यय (Non-Opruting Inlome and Expenses) भी दिए हों तो व्यावसायिक कार्यकुशलता के मापन के लिए शुद्ध संचालन लाभ अनुपात (Net Operating Profit Ratio) भी निकालना चाहिए, जिसका सुत्र निम्न प्रकार है। Net Operating $\frac{Net\ operating\ profit}{Net\ Sales}$x 100
iv) Net Operating Profit = Net Profit – Non Operating Inlome + Non - Operating Exponese

Or,

v) Gross Profit + Operating Inlome - Operating Exponese
vi)संचालन अनुपात (Operating Ratio) यह अनुपात संचालन लागत और शुद्ध विक्रीय की राशि के मध्य सम्बन्ध दशांता है। Operating Ratio:-$\frac{\text{Operating Cost}}{Net\ Sales}$ x 100
=$\frac{Cost\ of\ Goods\ Sold+\text{Operating Exponese}}{Net\ Sales}$x 100

Note:- संचालन अनुपात एवं शुद्ध संचालन लाभ अनुपात का योग 100 होता है।
2. $\frac{\text{Operating Exponese = Adminstration Exponese Sellings}}{Distribution-\text{Exponese}+\text{Finance Exponese}}$

3. व्यय अनुपात (Expenses Ratio) व्यय अनुपातों में विभिन संचालन व्ययों का शुद्ध बिक्री से सम्बध स्मपित कियाब जाता है। ये अनुपात स्पष्ट करके है कि विभिन्न व्ययों में विक्री का कितने प्रतिगतलग जाता है। सामान्यतः निम्न व्यय अनुपातों की गणना की जाती है।

a) प्रशासीनक व्यय अनुपात Administration Expenses Ratio$\frac{\text{Administration Expenses}}{Net\ Sales}$ x **100**

b) विक्री एवं वितरण व्यय अनुपात Selling and Distribuion Expenses Ratio =$\frac{Financed\ \text{Expenses}}{Net\ Sales}$x100

c)वित्तीय व्यय अनुपात $- Financed$ Expenses Ratio =$\frac{Financed\ \text{Expenses}}{Net\ Sales}$x100

Note:-आवश्यकतानुसार साम्रगी लागत अनुसार (Material cost Ratio) प्रत्यक्ष श्रम लागत अनुपात (Direct labourcost Ratio) तथा करखाना व्यय लागत (Foctory Expenses Ratio) इत्यादि की गणना भी की जा सकती है। सुत्र के निचले भाग में समता पूंजी की केवल चुकता राशि को हि लिखा जाता है।

4. विनोयोजित पंजी पर प्रत्याय (Retun on cuptal Employed) यह प्राप्यायं विनियोजित पंजी तथा लाभ के मध्य सम्बध स्थापित करता है। तथा किसी भी व्यावसायिक फर्म की सम्पूर्ण लाभदायकता एवं कार्यकुशलता का प्रायमिक मापदण्ड है।

5.सकल विनियोजित पूंजी (Gross Capital Employed).सकल विनियोजित पूंजी का अर्थ कुल सम्पत्ति (Total asstes or resoureces) से होता है। और इस आधार पर गणना निम्न प्रकार होता है। Return on gross gpitul Employed or total resouress = $\frac{Net\ Profit\ lbefore\ interests\ \&\ tex}{Total\ Assets}$x100

Note:-इस सुत्र में कुल सम्पत्ति में स्थायी तथा सभी सम्पत्तियों को जोड़ जाता है। लेकिन दिखावती सम्पत्तियों को छोड़ दिया जाता है। यदि स्थायी सम्पत्तियों के बाजार मूल्य दिए हो तो, उन्हे ध्यान में रखना चाहिए।

b) विनियोजित पूंजी का अर्थ सकल विनियोजित पूंजी चालू दायित्व से होता है। दुसरे शब्दों में इसका आशय अराधरी कोष+दीर्घकालीन दायित्व से होता है।

Return on (Net) Capptial Empolyed = $\frac{Net\ Profit\ (beforinterest\ \&\ Tax}{(Net)Captial\ Employed}$x100

Net Captial Employed= Total Asstes – Current Libilities

Note:- विनियोजित पूंजी के तीन अर्थ में शुद्ध विनियोजित पूंजी का अर्थ अधिक व्यावहरिक माना जाता है। अतः प्रश्न में यदि अन्य कोई संकेत न हो तो विनियोजित पूंजी पर प्रत्याय की गणना ममें शुद्ध विनियोजित पूंजी का ही प्रयोग करना चाहिए

6. प्रति अंश अर्जन (Earning per share or E.P.S) समता अंशधसरी की दृष्टि से प्रति अंश अर्जन (E.P.S) लाभदायकता का एक अच्छा मापदण्ड है। इसके आधार पर समान कार्य करने वाली कम्पनियों की कार्यकुशलता एवं लाभदायकता की तुलना सरलता से ही सकती है। प्रति अंश अर्जन का सुत्र इस प्रकार है।

$$E.P.S = \frac{Net\ Profit\ after\ tax - Preference\ Dividend}{No.of\ Equity\ Shares}$$

सम्पूर्ण लाभदायकता अनुपात (Overall Profilability Ratio) किसी व्यवसायकता उपक्रम की सम्पूर्ण लाभप्रदाता की दृष्टि से गणना किए जानें वाले मूख्य अनुपात उस प्रकार है।

i) स्वामित्व कोषें अथवा अंशधारियों के विनियोग पर प्रत्याय (Retun on Proprietor’s fnuds or shareholder’s investment) इस अनुपात को Return on owner’s Equity: Retun on Net woth या Return on shareholder’s yunds भी कहा जाता है।यह अनुपात स्वामित्व पूंजी सा विनियाग पर अर्जन शक्ति (earniny power) का निर्धारण करता है।

ii)Return on proprietor’s / shareholder’s funds =$\frac{Net\ Profit\ (affer\ Interest\ \&\ Tex}{Shareholder'sfunds}$ x 100

Note:-यदि प्रश्न में ब्याज या–कर का कोई उल्लेख न हो तो इस सुत्र के लिए शुद्ध लाभ को ज्येंक ा त्यों लिया जाता है। लेकिन यदि ब्याज एवं का से पूवर्व लाभ दिया होता होता लाभ में से ब्याज एवं कर की राशि को घटा दिया जाता है।

a) Shareholders found of Net Worth = Equity share Capital+Prefernce share capital+Reseves & surplus- Accunmulated cosses's fictitious Asstes.

b)समता पूंजी पर प्रत्याय (Renturn oon Equity Capital) समत पूंजी पर प्रत्याय की दर समत अंशधारियों की वृष्ति से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्योकि समत अंशो पर लाभांश समत अंशधारियों के लिए उपलब्ध लाभ पर निर्भर करता है। इसे (Return on owner) भी कहा जाता है। इस अनुपात की गणना निम्न दो अंश में की जा सकती है।

c)समत अंश धरियों के कोषों के अधार पर – यह अनुपात कम्पली की सम्पूर्ण कार्यकुशलता या लाभ प्रदता का प्रतीक होता है। Retun on Equity (shareholders funds) = $\frac{Net\ Profite}{Equity\ Share\ holders\ yur}$ **100**

Note:-इस सुत्र में शुद्ध लाभ का अर्थ Net profite (after interet tax and shareholder's funds = Equity Capital+Resever & Surpuls-Accumulated. Cosses are Fictitious Assets.) से होता है।

d)यदि प्रश्न में पूर्वाधिकार अंश न हो तो Retuen on shreholden funds/proprietor's funds or Retun on Net worth or return on Equity shareholders funds में कोई अन्तर नहीं होता समता अंश पजी के अधार परः–यह अनुपात अंशधारिया को उपलब्ध होने वाले लाभांश की वृष्टि से उपयोगी होता है।

Return on Equity Capital = $\frac{Net\ Profit}{Paid\ up\ Equity\ Capital}$x100

Note:-इस सुत्र में Net Profit का अर्थ वही है। जो Returen on Equity Sharesholder's funds में है। लेकिन आर्वत अनुपातों को क्रियाशीलता के अनुपात (Activity Ratios) अथवा निष्पादन के अनुसार (Performance Ratio) भी कहा जाता है। इन अनुपातों की गणना का मुख्य उदेश्य उपक्रम के कार्य निष्पादन तथा प्रबन्धकों की कार्यकुशलता का मूल्याकंन करना होता है। और यह निष्कर्ष निकाला जाता है।

आर्वत अनुपात (Turnover Ratios)

i)स्कन्ध आवर्त अनुपात (Stock Turnover Ratio) इस अनुपात को (Inventory Turnover, Meerchandise Turnover) भी कहा जाता है। यह अनुपात से सम्बन्ध स्थापित करता है। Stock Turnover Ratio:- $\frac{Cost\ of\ Goods\ Sold}{Average\ Stock\ or\ Invontory}$ Note:- Cost of goods sold = Sales-Gross Profite or = Opening Stock + Purchase+wages + Direct Exp-Colsing Stock

2.Average Stock = $\frac{Openiny\ Stock+Closing\ Stock}{2}$

3. यदि प्रश्न में बेचे गए माल की लागत न दी हो और न ज्ञात हो सकती है, तो इसके स्थान पर विक्रयब की शुद्ध राशि Net Sales प्रायोग कर सकते है।

4. यदि प्रश्न में औसत स्कन्ध न दिया हो और न जाता हो सकता हो तो प्राराम्भिक या अन्तिम स्कन्ध का ही प्रयोग किया जा सकता है।

5.प्रस्तूत सुत्र में स्कन्ध का अर्थ तैयार माल स्कन्ध (Stock of Finished goods) से होता है।

6ण्देनदार आवर्त अनुपात (Debtors Turnover Ratio) इस अनुपात को प्राप्त आवर्त (Receiv\ables Turnover Ratio) भी कहा जाता है। यहअनुपात वर्ष के औसत देनदारें से रूपया वसूली में कुशलता का माप होता है। यह अनुपात जितना अधिक होता है। उतना ही अच्छा माना जाता है।

Debtors Turnover Ratio:-$\frac{Net\ Creadit\,Sales}{Average\ Debtores/Receivables}$

Note:-(i) Net Creaditasales = Salees – Cashsales – Dalesretun

(ii) Average Debtors/ Receivbles = $\frac{\text{Opeing Debtors+Cosling}}{2}$

(iii) Receivable = bebtors + Bill Reaeivables औसत वसूली अवधि (Average collection Period or Debt Collection Period)

आसत वसूली अवधि (Average Collection Period or Debit Collection Period

देनदार आवर्त के सन्दर्भ में एक अन्य महत्वपूर्ण गणना औसत वसलू अवधि है। अवधि में वसूल हो जाती है।

Note:-1

Averge collection Period:- $\frac{\text{Average Debtors/Recivebles}}{Net\ Creadit\ Sales}$x365 उपर्युकत सुत्र के अधार पर वसूली अवधि दिनों में आती है। यह भी उल्लेखनीय है। कि कुछ लखक 365 के स्मान पर 360 का प्रयोग भी करते है। अतः राशि की प्रकृति देखकर 365 या 360 का प्रयोग किया जा सकता है।

2. यदि औसत वसूली अवधि माह में पूंजी गई हो ता 365 के स्थान पर 12 से गुणा करते है।

3. औसत देनदार प्राप्य की गणना में देनदरों के साथ प्राप्य विपप्तों (B/R) की राशि को भी जोड़ा जाता है।

4.ऐसे प्रश्न में अशोध्य प्रध्ण(Bad bebtes) तथा संदिग्ध एवं अेशोध्य ऋणो के लिए संचय (Reserve for Bad and Doublful Bebts) की राशि भी दी हो सकती है। संचय की राशि की गणना पर कोई प्रभव नहीं पडता लेकिन यदि देनदारों का अन्तिम शेष ज्ञात करना होता है। उसमें अशोध्य त्रध्ण की राशि को ध्यान में रखा जाता है।

5.लेनदारर आवर्त अनुपात (Creeditors Turnover Ratio):- लेनदारर आवर्त अनुपात उधार क्रय तथा औसत लेनदारों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करता है। इस अनुपात (देय आवर्त अनुपात) (Payable Turnover Ratio) भी कहते है।

Creditors Turnover Ratio:-$\frac{Net\ Creadit\,Purchases}{Aveage\,Creditors\,Payables}$

Note:- दय (Payables) का आर्य लेनदार+देय विपत्र ठध्च्छ से होता है। औसत भुकतान अवधि या औसत साख अवधि इस गाणनॉ के द्वारा यह जाता किया जाता है। कि लेनदारो को औसतन कितनी अवधि में भुकतन किया जाता है।

Average Payment Period = $\frac{\text{Average creditors/ Payables}}{Net\ Creadit\,Purchases}$

6.कार्यशील पूंजी आवर्त अनुपात (working Capital Turronover Ratio) यह अनुपात व्यापार में कार्यशील पूंजी के प्रयोग की केशलता को दर्शाता है। working Capital Turronover Ratio=$\frac{Coste\ f\,o\,Goods\ Sold}{working\ Capital}$

Note:-1.यदि प्रश्न मेें बेचे माल की लागत की जात न होत उसके स्थान पर विक्रय (Sales) का राशि का प्रयोग किया जा सकता है।

2.कार्यशील पूंजी = चालु – चालू दायित्व Current Asstes –Current Libilites

3.सम्पि.यों का आर्वत अनुपात (Assets Turronover Ratio)

4.Total Asstes Turronover = $\frac{(Net\ Sales\ or\ Cost\ of\ goods\ Sold}{Total\ Asstes}$

a) Fixed Asstees Turronover = $\frac{(Net\ Sales\ or\ Cost\ of\ goods\ Sold}{Fixed\ Asstes}$

b)Current Asstes Turronover = $\frac{Cost\ of\ goods\ Sold}{Current\ Asstes}$

Note:-यदि प्रश्न में Sales या Coste of goods वसक में से एक राशि उपलब्ध हो तो उपयुक्त आववते के अधार पर ज्ञात किया जाना चाहिए।

2.पूर्ण तरलता अनुपात (Absolute liquid Ratio) इस अनुपात को अधि तरलता अनुपात (Super Quick Ratioo) भी कहा जाता है। यह अनुपात पूंर्ण तरल सम्पतियों एवं तरल दोयत्वों के मध्य सम्बंध को दशांता है।

(Absolute liquid Ratio) =$\frac{(\text{Absolute liquid Asstes}}{\text{liquid Liabilites}}$

Note:-प‍्र्ण तरल समतियाों (Absolute liquid Asstes Cash in Hand+ Cash at Bank + Marketble Securites

i)तरल दायित्व (LIguid Liabilities) = Current Libilities – Bankoverdarve

ii)पूर्ण तरलता अनुपात का आदर्श स्तर 0.5:1 है।

(शोधनक्षमता अनुपात)

(Solvency Ratio)

शोधनक्षमता का आशय फर्म द्वारा देरा तिथि पर अपने दायित्वों का भुकतान करने की क्षमता से विश्लेषण दो भागों में बाटा गया है।

a)उत्पकलीन शीधनक्षमता (Short Terem Solvency) इसमें फर्म द्वारा अपने चालू दायित्वों का भुगतान करने की क्षमता की जाँच की जाती है। और इसके लिए तरलताअनुपात (Liquidity Ratios) का प्रयोग किया जाता है।

b) दीघकालीन शोधन क्षमता (Long –Term Solvency) इसममें फर्म द्वारा अपने दीर्घकालीन दायित्वों का भुकतान करने की क्षमता की जाँच की जाती है। और इस दृष्ट से प्रयोग किए जाने वाले अनुपातों का फर्म की क्तिीय स्थिति के अनुपात (Ratioo of financial Poosition) अवशा स्थासिब्व अनुपात (Debt Equity Ratio) कहा जाता है। इस वर्ग के मुख्य अनुपात निम्न प्रकार है।

i) ऋण समता अनुपात (Debt Equity Ratio) यह अनुपात फर्म की दीर्घकालीन वित्तीय स्थिति का निर्घारण करता है। और वाहा समता (External eyuities or outsider’s funds) तथा आन्तरिक समता (Internal equities or shareholder fund) के माध्य अनुपात को प्रकट करते है। इसका सुत्र अग्र प्रकार

Debt Equity Ratio $\frac{Debt}{Equity}$ or $\frac{Long\ Term\ Debt}{Shaareholders}$

दीर्घकालीन ऋणों:– में ऋणोपत्रों वित्तिय संस्थाओ के लिए ऋाणों तथा अन्य दीर्घकालीन दायित्वों को शामील किया जाता है। जवकि अंशधरी कोषों (Shareholder) में समता अंशइ पूंजी, पुर्वाधिकार उग्श पूंजी तथा संचय एवं आधिक्य को गामिल किया जाता है। तथा हानियों एवं कृत्रिम सम्पत्रियों जैसे प्रारूम्भिक व्यय ऋणपक्षें पर कटौती इत्यादि पर इस अनुपात को Ratio of Long Term Debt to Shareholder: yunds भी कहाजा सकता है।

ii) यदि प्रश्न में Sales तथा Cost of goods Sold दानों राशियों उपलब्ध हो तो कुछ सम्पत्ति आवते तथा स्थायी सम्पति आववर्त दोनों अधार पर निकालने चाहिए। लेकिन पर ही निकालना आवटे Coost of goods Sold के आधार पर ही निकालना चाहिए।

तरलता अनुपात (lquid)

तरलता का आशय फर्म की इस इमता से है। कि वह अपने दायित्वों का उनके देन होने पर भुगतान करने में समर्थ है। पद्ध चालू अनुपात (Current Ratio) फर्म की उपकालीन वित्तिय स्थिति का पता लगाने तथा शोधन क्षमता की जाँचच करने की दृष्ट से चालू अनुपात महत्वपूर्ण अनुपात है। इस कार्य शील पुर्जी भी कहते है। (Working Capital Raito)

$$\text{Current Ratio } \frac{Current\ Assets}{Current\ Liabilities}$$

Note:- चालू अनुपात का अपादर्श स्तर 2रू1 है। चालू सम्पतियों एवं दायित्वों में शामील की जाने वाली मदा का विवरण निम्न प्रकार है।

Current Asstes:-

a)Cash in Hand	a) Bill Receivable
b)Cash at Bank	b) Stock
c)Marketable Securities	c)Aceiad Income
d)Short Term Inverslment	c)Frepaid Exp
e) Debtors	

Current Liabilities:-

Creaditors	Bank Overdraft
Bill Payble	Proposed Dividend
Liability for Taxes	
Outstanding Exp.	

ii)तरल अनुपात (Liquid Ratio) इस अनुपात को त्वारित अनुपात (Quick Ratio) अथवा परख अनुपात (Acid Test Rati) भी कहा जाता है। यह अनुपात उल्पकालीन को तरलता के सही अर्थ में मापता है। तथा चचालू तरल सम्पतियों से की जाती है।

$$\text{Liquid Ratio or Quick Ratio} = \frac{Liquid\ Asstes}{Current\ Liabilities}$$

Note:- (i)तरल अथवा व्वरित अनुपात का आदर्श स्तर 1:1 है।

ii) Liquid Asstes = $\frac{Liquid\ Asstes}{Current\ Liabilities}$

iii) कुछ का प्रयोग भी करते है। जिसमें Liquid Liabilities = Current Liabilites – Bankoverdraft.

Note:- कुछ लेखक ऋण समता अनुपात में $\frac{Outsider's\ yunds}{Shareholder's yunds}$ यह ध्यान रखे कि बाहा कोषों (Outsider's Funds) में दीर्घकालीन दायित्वों के साथ चालू दायित्वों को भी शामील किया जाता है। लेकिन व्यवहार में दीघकालीन दायित्वों के आधार परर गणान को ही प्राथमिकता दी जाती है।

ii) यह प्रश्न भी विवादपूर्ण रहा है। कि पूर्वाधिकार अंशो को बहन कोषो में शामिल किया जाता है। और अंशधारियों कोषो में ।सामान्यतः इसे अंशधारी कोषो में ही शमील किया जाता है। लेकिन कुछ लेखाविदों का दृष्टिकोण है कि पर्वाधिकारी अंशो पर एक निशिचत दर से लाभांश देय होता है। तथा कम्पनी अधिनियम की नवीन व्यवस्था के अनुसार थे अंश निश्चित अवधि के प्श्चात शोध्य भी होते है। अतः इन्हे बहन कोषों में शामिल किया जाना चाहिए। इस सन्दर्भ ये यही सलाह दी जा सकती है। कि यदि प्रश्न में प्रर्वाधिकार अंध या अशांहय पूर्वाधिकाररी अंश लिख हो तो उन्हे अंशधारी कोषे में ही शमिल करना बाहरा कोषों में शामिल किया जा सकता है।

iii)स्वामित्व अनुपात (Proprietary Ratio) यह अनुपात स्वामित्व कोष और कुल सम्पति के मध्य सम्बन्धो को दर्शता है।

Proprietary Ratio = $\frac{Proprietor's\ Funds\ 0r\ Shareholder's\ Funds}{Total\ Asstes}$

iv)शोधदामता अनुपात (Solvency Ratio) यह अनुपात इस बात की जाँच करना है कि कम्पनी की कुल सम्पत्तियों से वसूल हो सकने वाली राशि सभी बही दायित्वो के गुकतान के लिए प्रार्यप्त है। या नहीं

$$\text{Solvency Ratio} = \frac{Total\ outside\ liabilities}{Total\ Asstes}$$

Note:-स्वामित्वव अनुपात और शोधनक्षमता अनुपात का योग प्रतिशत के रूप 100 होता है। इसके अर्थ है।कि यदि स्वामित्व अनुपात 60 प्रतिशत है। तो शोधन क्षमता अनुपात 40% होगा।

ii)वैकल्पिक रूप से $\frac{Tootal\ Asstes}{Total\ Outsinde\ Liabilities}$ के द्वारा भी शोधनक्षमताब अनुपात की गणना की जा सकती जिसका उत्तर विपरीत आएगा

iii) स्थायी सम्पत्ति अनुपात (Fixed Asstes Ratio) सुदृढ़ वित्तीय नीती के अनुसार स्थायी सम्पत्तियों का क्रय स्थायी या दीघकालीन दायित्वों से ही किया जाना चाहिए

Fixed Asstes Ratio = $\frac{Net\ Fixed\ Asstes}{Shareholder\ funds+Long\ term\ Liablites}$

Note:- (i) Net Fixed Asstes = Total Fixad Asstes-Depraciation

ii) इस अनुपात का आंदर्श 1:1 है। कुछ लेखको के अनुसार स्थायी स्मपति अनुपात में यह देखाना चाहिए कि स्थायी सम्पत्तयों की व्यवस्थ स्वामित्व कोषों सेही की गई है। या इसके लिए बहरी कोषें का भी प्रयोग किया है। इसके लिए (स्थायी सम्पत्तियों का शुद्ध मूल्य से अनुपात या स्थायी सम्पत्तियों कोषें से अनुवात) Fixed Asstes to Net worth Ratio or Ratio of Fixed Asstes to proprirtor's yunds)

Fixed Asstes to Net Work Ratio = $\frac{Net\ Fixed\ Asstes}{Net\ Worth}$

iii)पंजी दन्तीकरण अनुपात (Capital Geriny Ratio) यह अनुपात उपक्रम के अंश पूंजी कोष (समता अंश पूंजी + संचय एवं अधिक्य) तथा स्थायी लागत वाली पूंजी (पुर्वाअधिकार अंश + ऋणपत्र – दीर्घकालीन ऋण) के मध्य सम्बध को दर्शाता है। Capital Gecriny Ratio:- $\frac{Equity\ Share\ Capital+Reserves\ \&\ Surplus}{Prefernce\ Capital+Interest\ Beariry\ Financi}$

iv) ब्याज व्यातिप्त अनुपात या ऋण संवाअनुपात (Interest Coverage Ratio or Debt Service Ratio) यह अनूपात संस्था को ब्याज ऋण लेती है। तो प्रणदाता ऋण वापसी के साथ ही इस बात में भी रूची रखता है। कि लाभ दायता इतइी पार्यप्त हो कि ब्याज का भ्क्षुकतान सरलता से हो सके।

Interest Covragee Ratio $\frac{Net\ PProf\,it\ Intereststex}{Interest\ on\ Fixed\ Long\ Term\ Debent}$

v) ऋणका कुल कोषें ससे अनुपात :-(Debts to total Funds Ratio) यह अनुपात दीर्घकालीन वित्तयि सुदृदता का माप है। (Debts to total Funds Ratio:-$\frac{Debts\ Long\ F}{}$